सामाजिक-भावनात्मक सहयोग कार्यक्रमों का कार्यान्वयन

निर्मला डी.

सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (Socio-emotional Learning/ SEL) ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से सभी युवा एवं वयस्क ज्ञान हासिल करते हैं, उसका उपयोग करते हैं, स्वस्थ नज़रिए विकसित करते हैं, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करते हैं, दूसरों के लिए सहानुभूति दिखाते हैं, सहयोग पर आधारित रिश्ते बनाते व बरक़रार रखते हैं और ज़िम्मेदार व विचारपूर्ण निर्णय लेते हैं। इन परिणामों को हासिल करने के लिए शिक्षकों की सामाजिक-भावनात्मक पृष्ठभूमि को समझना ज़रूरी है और साथ ही उन्हें यह समझाना भी ज़रूरी है कि बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में यह कितना महत्त्वपूर्ण होता है, ख़ासतौर पर बच्चों को बेहतर ढंग से समझने में। इसमें उनकी पारिवारिक और सामाजिक पृष्ठभूमि भी सम्मिलित होती है - ये वे कारक हैं जो उनके सीखने को प्रभावित करते हैं।

यह इस घड़ी में ख़ासतौर पर महत्त्वपूर्ण है जब हम कोविड-19 की स्थिति से उबर रहे हैं, जिसका बच्चों की पढ़ाई पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। उनके सीखने की प्रक्रिया में व्यवहारगत बदलाव एवं विसंगतियाँ थीं। इसमें बदलाव के लिए, शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों को सुनने और उनके साथ बेहतर तालमेल बनाने पर ध्यान देना चाहिए। बच्चों की भलाई के इस पहलू पर आगे बढ़ने के लिए, हमने तीन कार्यक्रमों पर ध्यान केन्द्रित किया है।

एसईएल के लिए तीन कार्यक्रम

विद्या प्रवेश

विद्या प्रवेश को कक्षा-1 और 2 के लिए दस हफ़्तों के अल्पकालिक कार्यक्रम के रूप में सामने लाया गया। यह एक ग्रीट एंड मीट (Greet & Meet) पहल है जिसमें शिक्षक हर रोज़ अलग-अलग तरीक़ों से बच्चों का अभिवादन करते थे। फिर बच्चे कक्षा में इकट्ठे होते थे और अपनी दिनचर्या, परिवार, रुचियों या उनकी इच्छा के किसी भी विषय के बारे में बातें साझा करते थे। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों को एक मंच प्राप्त हुआ जिससे वे अपने विविध अनुभवों को साझा कर पाए और साथ-ही-साथ, इससे शिक्षकों को अवसर मिला कि वे बच्चों को, उनकी दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों को व उनके घर के परिवेश को बेहतर ढंग से समझ सकें।

चूँकि शिक्षक बच्चों का स्वागत मुस्कुराकर, हाथ मिलाकर या गले लगाकर करते थे, बच्चों को ये सत्र बहुत पसन्द आए। बच्चों के साथ गहरे रिश्ते बनाने के लिए ये भाव महत्त्वपूर्ण हैं। साथ ही, इस गतिविधि के माध्यम से शिक्षकों को स्वयं की भावनाओं को भी सही ढंग से जानने-समझने में मदद मिली।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, सामाजिक-भावनात्मक सरोकारों को समझना, उन पर ध्यान देना एक बार की गतिविधि नहीं है। इसे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के साथ एक समग्र रूप में एकीकृत करना होगा। विद्या प्रवेश की इस गतिविधि के जारी रहने के साथ ही बच्चों की भावनात्मक ज़रूरतों को पूरा करने की दिशा में अन्य नीतियाँ भी लागू की जा रही हैं, जैसे कि ऐसी कहानियाँ सुनाना जिनमें अलग-अलग भावनाएँ हों; कक्षा में भावनाओं के चार्ट लटकाना, जिससे बच्चों को अपने भीतर चल रही भावनाओं को समझने में और उनके अनुकूल प्रतिक्रिया देने में मदद मिल सके।

हमने शिक्षकों के साथ इन चर्चाओं की शुरुआत की है और इन पहलुओं को अपने भविष्य के सभी कार्यक्रमों में एकीकृत करने की योजना बना रहे हैं। हालाँकि, हमें कुछ ज़मीनी चुनौतियों को दूर करना होगा, जैसे कि बच्चों में सीखने के प्रति रुचि का अभाव और उनके ध्यान देने की अवधि में भारी कमी।

मलेबिल्लु

मलेबिल्लु एक और पहल है जिसे हमने कक्षा-4 से 8 के लिए शुरू किया। इसका मक़सद मुख्य रूप से बच्चों को स्कूल आने के लिए प्रोत्साहित करना था। कक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए उन्हें स्कूल लाना और कक्षा में बैठाना बहुत महत्त्वपूर्ण है। गतिविधि आधारित होने के कारण बच्चे इस कार्यक्रम में बहुत उत्साह से शामिल हुए। एक शिक्षक ने देखा कि माता-पिता को शिक्षित करना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि बच्चों को शिक्षित करना, क्योंकि माता-पिता की स्कूलों और बच्चों से बहुत अपेक्षाएँ होती हैं। माता-पिता को यह समझने की आवश्यकता है कि शिक्षक भी बच्चों के सीखने के बारे में उतने ही चिन्तित हैं जितने वे हैं। साथ ही उनके सीखने की बहाली एक धीमी और लम्बी प्रक्रिया होगी तथा बच्चों के भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए इस प्रक्रिया के दौरान बहुत संवेदनशीलता बरतनी होगी।

ऐसे मामलों में जहाँ बच्चे परिवार में स्कूल जाने वाली पहली पीढ़ी हैं और उन्हें स्कूल के घण्टों के बाद घर से सीखने में कोई सहायता नहीं मिलती, शिक्षकों को और अधिक मेहनत करनी होगी व और अधिक संवेदनशीलता दिखानी होगी ताकि इन बच्चों को ज़रूरी परिणाम हासिल करने में मदद मिल सके। शिक्षकों द्वारा दिखाई जाने वाली ऐसी चिन्ता बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं को भी पूरा करती है।

नली-कली

तीन साल तक के बच्चे नली-कली प्रक्रिया के अनुरूप चलते हैं, जो पूरी तरह से गतिविधि आधारित है और बच्चों के एक-दूसरे से सीखने की प्रक्रिया को बढ़ावा देती है। इसका अर्थ यह है कि बच्चों के बैठने की कोई मानक व्यवस्था नहीं है — बच्चे कक्षा में घूमते हैं, अपने साथियों से मिलते हैं और साभिनय (एक्शन) गीत गाते हैं। शिक्षिका भी उनके समूह/गोले में बैठ जाती हैं और उनकी भूमिका शिक्षक से ज़्यादा एक सुगमकर्ता की होती है। यह भी बच्चों की भावनात्मक ज़रूरतों को पूरा करने का एक तरीक़ा है।

एक शिक्षिका ने बताया कि उन्होंने अपने स्कूल में बच्चों को सीखने की हर प्रक्रिया में ख़ुद को अभिव्यक्त करने के अवसर देकर एक भयमुक्त वातावरण को बनाया, साथ-ही-साथ उन्होंने बच्चों को छोटी-छोटी बातें उदाहरणों के द्वारा सिखाईं। मसलन, जब बच्चे स्कूल परिसर में कूड़ा फेंक देते, तो वे कूड़ा उठाकर कूड़ेदान में डाल देतीं। जल्द ही उन्हें ऐसा करने की आवश्यकता नहीं रही। बच्चे कूड़ेदान का इस्तेमाल करने लगे और यह उनकी आदत बन गई। वे बच्चों को सही और ग़लत का बोध कराने के लिए उनकी घरेलू भाषा में कहानियाँ और लोक कथाएँ भी सुनाती थीं। बच्चों द्वारा कक्षा में मूल्यों को सीखना और शिक्षकों द्वारा बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक भलाई के महत्त्व का और उनके विकास पर इसके प्रभाव का एहसास करना, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।



चित्र-1 : स्थानीय मान को समझने की गतिविधि में संलग्न बच्चे।



निर्मला डी. अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ कलबुर्गी ज़िला स्थित जेवरगी ब्लॉक में रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने गणित में अपनी स्नातकोत्तर पढ़ाई बेंगलूरु विश्वविद्यालय से पूरी की है। उन्हें गाना सुनना, गाना और नॉन-फ़िक्शन साहित्य पढ़ना पसन्द है। उनसे nirmala@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : पल्लवी प्रतिभा **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय